यात्रा की तैयारी करना

हम एक यात्रा आरम्भ करने वाले हैं। यह एक रोमांचकारी सफ़र होगा, परन्तु इस पर जाना कई बार कठिन लगेगा। तौ भी यह आपका सबसे महत्वपूर्ण सफ़र हो सकता है। हम रोमियों की पुस्तक का भ्रमण करेंगे।

किसी भी भ्रमण के लिए तैयारी आवश्यक है। कपड़े और सामान पैक करना आवश्यक होता है और नक्शे की भी आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार आगे के सफ़र की तैयारी के लिए यह पाठ है। एक लक्ष्य गाइड के साथ घूमना है, जिसमें आप और मैं इकट्ठे जाएंगे। इसका एक लक्ष्य आप को तैयार करना है। एक और लक्ष्य आप को रोमियों को खुद देखने के लिए तैयार करना है।

गाइडिड टूअर और स्वयं घूमने की दोनों बातों में कुछ कमज़ोरियां भी हैं और शक्तियां भी। 1974 में मैंने अपने परिवार के साथ अपने दम पर यूरोप में पैंतालीस दिन बिताए। जब हमें उन देशों की अधिकतर भाषाएं नहीं आती थीं। हमारी जानकारी का मुख्य स्रोत *यूरोप ऑन फाइव-टू-टेन डॉलर्स ए डे* नामक पुस्तक थी। मैंने उस सफ़र के दौरान अपने नोट्स को ''यूरोप ऑन फाइव-टू-टेन नर्वस ब्रेकडाउंस ए डे'' नाम दिया। कई बार मेरी इच्छा होती थी (*तीव्र* इच्छा) कि ''कोई मुझे रास्ता दिखाए'' (देखें प्रेरितों 8:31)।

1989 में मुझे और मेरी पत्नी जोअ को तुर्की (''असिया की सात कलीसियाओं'' वाली जगह) और ग्रीस का बारह दिन का गाइडिड टूअर दिया गया था। हमने उन बारह दिनों में इतना कुछ देखा, जो हम खुद एक महीने में नहीं देख पाए थे। तौ भी हमारे दल के एक से दूसरी जगह पर जाने पर मेरी इच्छा यही होती थी कि मैं इस या उस प्राचीन नगर के खण्डहरों में एक और दिन गुजारूं। मैं चाहता था कि जो कुछ हमें बताया जा रहा है, उसी समय हमें वहां ले जाए और मेरा ध्यान उन प्रेरितों और आरम्भिक मसीही लोगों पर जाता था, जो उन गलियों में टहले होंगे, जिनमें हम घूम रहे थे।

पाठों की यह शृंखला एक गाइडिड टूअर होगी। आपके टूअर गाइड के रूप में मैं ''दिलचस्पी की जगहों'' पर टिप्पणी करूंगा। मैं इस सफ़र को जितना हो सके आनन्ददायक और तनावमुक्त बनाने की कोशिश करूंगा। जहां आगे जाने की मनाही हो और रास्ता ढलानदार हो, मैं आपको चढ़ाई चढ़ने में सहायता दूंगा। इसके साथ ही आपको अपनी निजी यात्रा भी करनी आवश्यक है। हर पाठ में पहले आपको वे आयतें मिलेंगी, जिन पर चर्चा की जानी है। मेरी टिप्पणियां पढ़ने से पहले कई बार उन आयतों को स्वयं पढ़ें। इस पर विचार करें; इसके लिए प्रार्थना करें। अपने आप से पूछें, ''पौलुस मूल पाठकों से क्या कह रहा था?'' फिर पूछें, ''इन आयतों में परमेश्वर *मुझसे* क्या कह रहा है?''

इस परिचय पाठ का उद्देश्य आपको हमारी इस यात्रा में केवल तैयार करना ही नहीं, बल्कि खोज की आपकी अपनी यात्रा के लिए भी आपको तैयार करना है। चलते-चलते मैं कई चीज़ों को देखने का सुझाव दूंगा और पुस्तक में कई मुख्य राजमार्गों की रूपरेखा दूंगा।

इसका लेखक कौन था?

रोमियों की पुस्तक का ईश्वरीय लेखक पवित्र आत्मा था (देखें 2 पतरस 1:21; 1 कुरिन्थियों 2:4, 10, 13)। मानवीय लेखक (आत्मा की प्रेरणा पाया हुआ) का नाम 1:1 में पौलुस बताया गया है: ''पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है और प्रेरित होने के लिए बुलाया गया और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिए अलग किया गया है।'' मैं किसी ऐसे रूढ़ीवादी विद्वान को नहीं जानता, जो यह इनकार करता हो कि इस पुस्तक को पौलुस प्रेरित ने लिखा। हर आलोचक इस बात को मानता है कि पौलुस नाम का एक व्यक्ति था, उसने कुछ पत्रियां लिखीं और रोमियों के नाम पत्री उनमें से एक है। चार्ल्स हौज ने लिखा है, ''संसार में ऐसी कोई प्राचीन पुस्तक नहीं है ... जिसकी प्रामाणिकता इस पत्री से अधिक सुनिश्चित हो।''[1]

यह पत्री स्पष्टतया तिरतियुस नामक एक लिखने वाले से, जिसने अन्त के निकट अपना अभिवादन जोड़ दिया, पौलुस द्वारा लिखवाई गई (16:22)। सम्भवतया यह फीबे नामक एक मसीही स्त्री द्वारा रोम में पहुंचाई गई (देखें 16:1, 2)। उस जमाने में आज की तरह डाक सेवा नहीं होती थी। **सरकार के पास कारोबार के मामलों के लिए दूत होते थे, परन्तु साधारण लोग अपनी पूरी कोशिश करते थे कि वे अपेक्षित जगह जाने वाले मित्रों या जानकारों के हाथ पत्र भेज दें।**

प्राप्तकर्त्ता कौन थे?

पत्र के प्राप्तकर्त्ताओं के नाम 1:7 में दिए गए हैं: ''सब के नाम, जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं।'' एक बार फिर हम इस बात पर सहमत हैं कि यह पत्र रोम में रहने वाले मसीही लोगों के नाम लिखा गया था। कलीसिया मसीही लोगों के समूह (जो यीशु मसीह के लहू के द्वारा बचाए गए हैं) से न कम है और न अधिक, इसलिए हम यह मान लेते हैं कि यह पत्र रोम की ''कलीसिया'' या उस नगर की कई ''घरेलू कलीसियाओं'' (मण्डलियों) (देखें रोमियों 16:3, 5क) को लिखी गई। अपनी टिप्पणियों में मैं कई बार ''रोम की कलीसिया'' का उल्लेख करूंगा, जो रोम के रहने वाले सब मसीही लोगों को कहने का साधारण ढंग है।

रोम की कलीसिया

रोम संसार का सबसे बड़ा नगर, उस शक्तिशाली रोमी साम्राज्य की राजधानी था, जो बर्तानिया से लेकर अरब तक फैला हुआ था। अमेरिका में रहने वाले लोग इसे आज के न्यू यॉर्क नगर की तरह मान सकते हैं। यदि आप ग्रेट ब्रिटेन में रहते हैं तो ''न्यू यॉर्क नगर'' की जगह यहां ''लंदन'' मान लें। यदि आप जापान में रहते हैं तो ''टोकियो'' समझें। जहां भी आप रहते हैं, वहां सम्भवतया बड़ा नगर है, जिसे राजनैतिक, आर्थिक या सामाजिक केन्द्र माना जाता है। पौलुस के समय में एक कहावत थी कि ''सब रास्ते रोम को जाते हैं।'' रोमियों की पुस्तक लिखे जाने के समय, सिंहासन पर नीरो था और यह साम्राज्य अपनी महिमा और शक्ति के चरम पर था।

हम नहीं जानते कि रोम में कलीसिया कैसे और कब बनी। कैथोलिक चर्च का मानना है कि वहां पतरस ने कलीसिया बनाई और अपनी मृत्यु तक उसने पच्चीस साल तक इसके बिशप के रूप में सेवा की। ऐसा कोई प्रमाण तो नहीं है कि पतरस कलीसिया के आरम्भिक समय में रोम में गया

था, परन्तु इस विश्वास के विपरीत काफी प्रमाण हैं। उदाहरण के लिए रोमियों की पुस्तक के अन्त में, जब पौलुस ने रोम में अपने परिचितों का अभिवादन किया (16:3-15), तो उसने पतरस का उल्लेख नहीं किया, परन्तु वह उससे कई अवसरों पर मिला था (उदाहरण के लिए देखें प्रेरितों 15:7, 12)। पौलुस ने न तो अपने पहले कारावास के समय (इफिसियों ,फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, फिलेमोन) न दूसरे कारावास (2 तीमुथियुस; देखें 4:11क) के समय पतरस का उल्लेख किया।

यह बताने के लिए कि क्या हुआ हो सकता है, मैं कुछ ऐतिहासिक तथ्य बताना चाहता हूं। रोम में यहूदियों की काफी आबादी थी। रोमी सेनापति पोम्पे द्वारा यहूदी राष्ट्र पर विजय पाकर यरूशलेम को कब्जे में लेने के समय कई यहूदी कैदियों को बन्दी बनाकर रोम में भेजा गया था। उनके द्वारा मूसा की व्यवस्था का कड़ाई से पालन करने के कारण वे दास होने के योग्य नहीं थे। अन्ततः उनके स्वामियों ने उन्हें छोड़ दिया और तिबुरियुस के पार रहने के लिए जगह दे दी। यह क्षेत्र बदनाम था, परन्तु यहूदी लोग वहां फलने-फूलने लगे। डी. डी. वेडन ने लिखा है कि ''आराधनालयों में ... रोमी स्त्रियों के साथ सब्त के दिन इतनी भीड़ होती थी कि एक कवि जवान पुरुषों को रोम की सुन्दरता और फैशन की झलक पाने के लिए वहां जाने की सलाह देता था!''[2]

रोम से यहूदी लोग प्रेरितों 2:10 में वर्णित पिन्तेकुस्त के यहूदी पर्व को मनाने के लिए यरूशलेम जाते थे। शायद उनमें से कुछ लोग मसीही बन गए और कलीसिया के तितर-बितर हो जाने के बाद (प्रेरितों 8:1) वे सुसमाचार अपने साथ लेकर रोम वापस चले गए (प्रेरितों 8:4)। यह भी सम्भव है कि मसीही लोगों के तितर-बितर हो जाने से पहले प्रेरितों ने कुछ लोगों पर हाथ रखकर (देखें प्रेरितों 8:17, 18) उन्हें अपने दम पर काम करने में सहायता के लिए आश्चर्यकर्म से ज्ञान दिया हो। आश्चर्यकर्म से मिले इस दान का बढ़ना उन लोगों द्वारा सिखाने से हुआ हो सकता है, जिन्हें भविष्यवाणी का दान मिला था या जो परमेश्वर की प्रेरणा से प्रचार कर सकते थे (देखें रोमियों 12:6)।

एक और सम्भावना यह है कि पौलुस द्वारा बने मसीहियों में से कुछ लोगों ने रोम में जाकर वहां कलीसिया स्थापित की। (रोमियों 16 में पौलुस के परिचितों की सूची देखें।) उस नगर से यातायात जाता-आता रहता था। कोई संदेह नहीं कि यात्रियों में पौलुस द्वारा बनाए कई मसीही भी होंगे, जिनमें से कइयों के सिर पर हाथ रखकर उसने (देखें प्रेरितों 19:1-7) उन्हें आश्चर्यकर्म करने की योग्यता दी हो।

रोम में कलीसिया की स्थापना चाहे जैसे भी और जब भी हुई, पर एक दस्तावेज यह संकेत देता है कि उस नगर में लोग मसीह को 49 या 50 ईस्वी तक जानने लगे थे। वेडन ने लिखा है, ''यहूदियों में ऐसी उत्तेजनाएं जागीं (लगभग 50 ईस्वी) जिनसे नगर प्रबन्ध का ध्यान उनकी ओर खिंचा, जिन्हें गुप्त सूचना मिली थी कि यह गड़बड़ी ख्रिस्तुस नाम के किसी व्यक्ति द्वारा हुई है, जो स्पष्टतया ख्रीस्ट नाम का ही सुधार था।''[3] 50 के दशक के दूसरे भाग के मध्य में रोमियों के नाम पौलुस द्वारा लिखने के समय कलीसिया वहां जीवित और सक्रिय थी (देखें रोमियों 1:8)।

यहूदी या अन्यजाति

एक प्रश्न जो कइयों को परेशान करता है, वह यह है कि रोम में कलीसिया में मुख्यतया यहूदी, अन्यजाति या दोनों थे। पत्र में पौलुस ने आरम्भ में अन्यजातियों को सम्बोधित किया: ''...

मैंने ... तुम्हारे पास आना चाहा कि जैसे मुझे और अन्यजातियों में फल मिला, वैसा ही तुम में भी मिले'' (1:13; 15:15, 16 भी देखें)। परन्तु अन्य आयतों में यहूदियों को सम्बोधित किया गया है। उदाहरण के लिए पौलुस ने लिखा, ''तू यहूदी कहलाता है'' और फिर जोड़ा कि ''तुम्हारे कारण अन्यजातियों में परमेश्वर के नाम की निंदा की जाती है'' (2:17, 24; 4:1 भी देखें)। इस स्थिति की तुलना एक व्यक्ति से की जा सकती है जिसके सामने दो लोग खड़े हों। कई बार वह पहले को सम्बोधित करते हुए टिप्पणी करता है और कई बार दूसरे को सम्बोधित करता है।

यह तथ्य कि कलीसिया में अन्यजाति और यहूदी दोनों तरह के लोग थे, महत्वपूर्ण है, परन्तु उनके सही-सही प्रतिशत का होना महत्वपूर्ण नहीं। यह सम्भव है कि रोम की कलीसिया में यहूदियों से अधिक संख्या अन्यजाति सदस्यों की हो। यहूदियों को 49 या 50 ईस्वी के लगभग रोम से निकाला गया था (देखें प्रेरितों 18:2)। इसमें सम्भवतया यहूदी मसीही भी थे, जिस कारण रोम की कलीसिया में अन्यजाति मसीही रह गए होंगे। प्रतिबन्ध हटा लिए जाने पर निकाले गए, कुछ लोग वापस आ गए (पढ़ें प्रेरितों 18:2 और रोमियों 16:3); परन्तु इस समय तक कलीसिया में अन्यजाति प्रमुख हो गए होंगे।

यह निष्कर्ष पत्र के आरम्भ में पौलुस के अन्यजातियों को सम्बोधन से सहमत होगा (रोमियों 1:13)। इसके अलावा इससे यह समझाने में सहायता मिलेगी कि रोमियों 16 अध्याय वाले 28 नामों में से केवल दो ही यहूदी क्यों हैं। इसके अलावा प्रेरितों 28:17-22 संकेत देता है कि रोम के यहूदियों में सुसमाचार का प्रचार वहां पौलुस के कारावास से पहले सीमित था।

रोम में कलीसिया के साथ पौलुस का सम्बन्ध

कइयों को रोम में कलीसिया के साथ पौलुस के सम्बन्ध में भी दिक्कत आती है। कैथोलिक लोगों को आश्चर्य है कि पौलुस को यह पत्र लिखने का क्या अधिकार था, जबकि पतरस (उनका पहला पोप) वहां (उनके दावे के अनुसार) था। नास्तिक लोग पूछते हैं, ''पौलुस को ऐसा पत्र लिखने का क्या अधिकार था, जबकि वह किसी दूसरे से अलग नहीं था?'' धर्म में बाइबल को अधिकार के रूप में मानने वालों को रोम की कलीसिया के साथ पौलुस के सम्बन्ध को समझने में कोई कठिनाई नहीं आती। मसीह ने पौलुस को अन्यजातियों के लिए प्रेरित बनाकर भेजा था (प्रेरितों 26:16-18)। सबसे पहले अन्यजाति नगरों की दिशा में उसका ध्यान न जाना केवल समय के कारण था (देखें रोमियों 1:5, 9-11)।

यह पुस्तक कहां लिखी गई? और कब लिखी गई?

कालक्रम के अनुसार समीक्षा

कालक्रम के अनुसार समीक्षा से हमें यह जानने में सहायता मिल सकती है कि रोमियों की पुस्तक कहां और कब लिखी गई। हम अपनी समीक्षा पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा से आरम्भ करते हैं। गलातिया और फ्रूगिया में जाने के बाद वह इफिसुस में आया (प्रेरितों 18:23; 19:1)। वहां रहते हुए उसने रोम जाने की योजनाएं बनाईं ''पौलुस ने ठाना कि मकिदुनिया और अखाया से होकर यरूशलेम को जाऊं, और कहा कि वहां जाने के बाद मुझे रोम को भी देखना आवश्यक है''

(प्रेरितों 19:21)।

इफिसुस में पैदा हुई गड़बड़ी के बाद (प्रेरितों 19:23-41) पौलुस मकिदुनिया को चला गया (20:1) जहां उसने गर्मियों और पतझड़ का समय बिताया। फिर वह सर्दियों के तीन महीनों के लिए यूनान विशेषकर कुरिन्थुस में चला गया (प्रेरितों 20:2, 3; देखें 1 कुरिन्थियों 16:6)। कुरिन्थुस से वह वहां के निर्धन मसीही लोगों के लिए चन्दा लेकर (देखें 1 कुरिन्थियों 16:1-4) यरूशलेम को निकल पड़ा (प्रेरितों 20:3, 16)।

कुरिन्थुस से लगभग 57 या 58 ईस्वी

अधिकतर लेखक इस बात से सहमत हैं कि रोमियों की पत्री कुरिन्थुस में पौलुस के तीन माह के समय में लिखी गई। इसके अलावा अधिकतर लेखक उसके इस ठहराव को 57 या 58 ईस्वी के आस-पास बताते हैं। यह निष्कर्ष कि रोमियों की पुस्तक इस यात्रा के अंक के निकट कुरिन्थुस से लिखी गई, रोमियों 15 में बताई गई पौलुस की योजनाओं से मेल खाता है:

> परन्तु अभी तो पवित्र लोगों की सेवा करने के लिए यरूशलेम को जाता हूं। क्योंकि मकिदुनिया और अखाया [कुरिन्थुस अखाया में था] के लोगों को यह अच्छा लगा कि यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिए कुछ चन्दा करें। ... सो मैं यह काम पूरा करके ... तुम्हारे पास होता हुआ स्पेन को जाऊंगा (आयतें 25-28)।

इस निष्कर्ष पर पत्र के अन्त के निकट तीन लोगों के नाम को और ज़ोर मिलता है। पहली तो फीबे है, जो स्पष्टतया रोम में पत्र ले गई: ''मैं तुम से फीबे की, जो हमारी बहिन और किंख्रिया की कलीसिया की सेविका है, विनती करता हूं'' (16:1)। किंख्रिया कुरिन्थुस की पूर्वी बन्दरगाह थी। दो अन्य लोगों का नाम 16:23 में है: ''गयुस का जो मेरी और कलीसिया का पहुनाई करने वाला है उसका तुम्हें नमस्कार: इरास्तुस जो नगर का भण्डारी है, का, तुम को नमस्कार।'' गयुस नाम का एक व्यक्ति था, जिसे कुरिन्थुस में पौलुस द्वारा बपतिस्मा दिया गया था (1 कुरिन्थियों 1:14)। प्रेरितों 19:22 और 2 तीमुथियुस 4:20 में इरास्तुस नामक एक भाई की पहचान कुरिन्थुस से होती है। (हम प्राचीन कुरिन्थुस के खण्डहरों के शिलालेख पर आगे चर्चा करेंगे, जो इरास्तुस नामक एक नगर अधिकारी की बात करता है।)

कालक्रम के अनुसार समीक्षा जारी रहती है

आइए पौलुस की यात्राओं में थोड़ा आगे चलते हैं, क्योंकि इससे हमें रोम के नाम उसके लिखने की प्रक्रियाओं की समझ मिल सकती है। यरूशलेम जाने के दौरान पौलुस इफिसुस में कलीसिया के प्राचीनों से मिला (प्रेरितों 20:17, 18)। उसने उन्हें बताया:

> और अब देखो, मैं ... यरूशलेम को जाता हूं, और नहीं जानता कि वहां मुझ पर क्या-क्या बीतेगा? केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है कि

बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार हैं। परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूं, ... (आयतें 22-24)।

प्रेरितों 21 में हमें पता चलता है कि पवित्र आत्मा ''हर नगर में गवाही देता'' था। पौलुस के कैसरिया में पहुंचने पर, यहूदिया से आए एक नब्बी ने पौलुस के कटिबंध से अपने हाथ-पांव बान्ध लिए और कहने लगा, ''आत्मा यह कहता है कि जिस मनुष्य का यह पटका है, उसको यरूशलेम में यहूदी इसी रीति से बान्धेंगे, और अन्यजातियों के हाथों में सौंपेंगे'' (आयत 11)। वहां उपस्थित लोगों ने पौलुस से यरूशलेम को न जाने का आग्रह किया (आयत 12), परन्तु उसने उत्तर दिया, ''मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में न केवल बान्धे जाने ही के लिए बरन मरने के लिए भी तैयार हूं'' (आयत 13)। इन आयतों को पढ़ते हुए मुझे यह प्रभाव मिलता है कि पौलुस इस प्रकार सिखाता था कि वह जैसे रोम कभी नहीं पहुंचेगा। रोमियों के नाम पत्र लिखने के पौलुस के उद्देश्य पर चर्चा करते समय इस बात को ध्यान में रखें।

पौलुस को यरूशलेम में बन्दी बनाकर ले जाने के बाद (आयत 30) प्रभु ने पौलुस को दर्शन देकर बताया ''हे पौलुस, ढाढ़स बान्ध; क्योंकि जैसी तूने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी'' (प्रेरितों 23:11)। यह सम्भवतया पौलुस का पहला आश्वासन था कि रोम को जाने की उसकी योजनाएं अन्ततः पूरी हो जाएंगी। कई साल बाद पौलुस रोम में पहुंचा अवश्य (प्रेरितों 28:16), परन्तु अपनी योजना के अनुसार एक सुसमाचार प्रचारक के रूप में नहीं, बल्कि अपने जीवन की पेशी के लिए।

इसकी शैली और बाइबल में इसका स्थान क्या है ?

इसकी शैली क्या है ?

रोमियों एक पत्र है, परन्तु यह साधारण पत्र नहीं है। इसे अन्दर से निबन्ध वाला पत्र या पत्र में लिपटा निबन्ध माना जा सकता है। यह पत्र इसलिए है क्योंकि इसमें उस समय इस्तेमाल किए जाने वाले अभिवादन, निष्कर्ष और ऐसी बातों के साथ पत्राचार का ढंग इस्तेमाल किया गया है। यह एक निबन्ध भी है, जो किसी विषय पर औपचारिक रूप से संगठित की गई विवेचना है।

इसे पौलुस के लेखों में पहला स्थान क्यों दिया गया है ?

रोमियों की पुस्तक प्रेरितों के काम की पुस्तक के तुरन्त बाद पौलुस के लेखों में सबसे पहले क्यों है ? रोमियों की पुस्तक पौलुस का लिखा पहला पत्र नहीं था। इससे पहले उसने 1 व 2 थिस्सलुनीकियों, 1 व 2 कुरिन्थियों और गलातियों लिखे। रोमियों उसका छठा पत्र है, यह कम से कम हमारे लिए सम्भाले गए उसके पत्रों में से छठा अवश्य है। तो फिर इसे पहले क्यों रखा गया ? कइयों का मानना है कि रोमियों की पुस्तक को यहां इसलिए रखा गया क्योंकि यह उसके पत्रों में सबसे लम्बा है,[4] परन्तु निश्चय ही लम्बाई एकमात्र कारण नहीं है। आमतौर पर माना जाता है कि रोमियों की पुस्तक पौलुस की श्रेष्ठ पुस्तक है। पौलुस रोमियों की पुस्तक में चर्चा किए गए विषयों से निपटने के लिए तैयार (आत्मा की अगुआई में) अपनी मानसिक और आत्मिक योग्यताओं के

चरम पर था।

रोमियों की पुस्तक तर्कसंगत रूप में प्रेरितों के काम की पुस्तक के बाद आती है। डेव मिलर ने कहा, ''प्रेरितों के काम की पुस्तक उद्धार की शर्तें बताती है, जबकि रोमियों की पुस्तक उद्धार का आधार देती है। रोमियों की पुस्तक विशेष रूप से यह बताने के लिए नहीं लिखी गई थी कि क्या करना है। प्रेरितों के काम की पुस्तक आपको 'क्या' बताती है जबकि रोमियों की पुस्तक आपको 'कैसे' और 'क्यों' बताती है।''[5]

क्या यह कैनन से मेल खाती है ?

''कैनन'' शब्द ''नियम'' के अर्थ वाला लातीनी शब्द है, जिसे ''मापने वाली छड़ी'' का संकेत देते यूनानी शब्द *kanon* से लिया गया है। बाइबल में ''कैनन'' उन पुस्तकों का संकेत देने के लिए है, जो ''नापी गई'' हैं, जो ''परीक्षा में सफल हुई'' हैं और जिन्हें परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए वचन के मान्य भाग माना जाता है। क्या रोमियों की पुस्तक को नये नियम में रखे जाने का अधिकार है? फिर, इसमें सहमति मिलती है। कैनन में रोमियों की पुस्तक (इस नाम से) का स्थान बिना किसी संदेह के हमेशा से था। आरम्भिक, परमेश्वर की प्रेरणा रहित लेखकों के लेखों से यह संकेत मिलता है कि पौलुस की पत्रियां 90 ईस्वी से पहले वितरित हो रही हो सकती हैं।

क्या वर्तमान पुस्तक प्रामाणिक है?

रोमियों के नाम पत्र के सम्बन्ध में वचन होने पर कई सवाल उठते हैं। उदाहरण के लिए, रोमियों की कुछ आरम्भिक प्रतियों में अध्याय 1 में ''रोम'' शब्द नहीं है और कइयों में अन्तिम अध्याय नहीं है। इससे यह संकेत मिल सकता है कि कुछ क्षेत्रों में यह पत्र बिना निजी हवालों के के रूप में वितरित किया गया, तौ भी विद्वान आमतौर पर सहमत हैं कि नये नियम में दिए गए सोलह अध्याय ''पौलुस द्वारा रोम के मसीही लोगों को लिखे मूल वचन का भाग हैं।''[6]

इसका उद्देश्य क्या था ?

पौलुस ने यह पत्र लिखने के कम से कम तीन कारण बताए:

(1) एक व्यक्तिगत कारण: अपने आने की घोषणा करना (1:11, 15)।
(2) एक धर्मशास्त्रीय कारण: सुसमाचार के मूल सिद्धांतों की समीक्षा और स्पष्ट करना (15:15)।
(3) एक वित्तीय कारण: स्पेन की प्रस्तावित यात्रा के लिए सहायता लेना (15:22-24, 28)।

कोई संदेह नहीं कि इस पत्र के परिचय में *कई* बातें थीं, परन्तु हमारी दिलचस्पी पत्र के *मुख्य* उद्देश्य में है।

पहले तो मैं यह सुझाव देता हूं कि यह पुस्तक मुख्यतया पौलुस द्वारा गलातियों तथा अन्य पत्रों की तरह यहूदी शिक्षा देने वालों के विरुद्ध अपने बचाव के लिए *नहीं* लिखी गई। पौलुस का उद्देश्य

रोम के मसीही लोगों को इन झूठे शिक्षकों के निकट आगमन के विरुद्ध तैयार करने की इच्छा रही हो सकती है, परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि वे रोम में पहुंच चुके थे।

फिर, याद रखें कि रोमियों केवल ''प्रथम सिद्धांत'' संदेश ही नहीं है।[7] रोमी मसीहियों का विश्वास पूरे जगत में प्रसिद्ध था (1:8)। वे ''भलाई से भरे और ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर [थे जो] एक-दूसरे को चेता सकते'' (15:14) थे। उनकी आवश्यकता वचन के ''दूध'' की उतनी नहीं थी (जिसे वे आसानी से पचा सकते थे), बल्कि ''अनाज'' की थी (जिसे पचाना आसान नहीं है) (देखें इब्रानियों 5:12)। नये नियम की किसी पुस्तक को यदि ''अनाज'' कहा जा सकता है तो वह रोमियों की पुस्तक है। चार्ल्स स्विन्डल का अवलोकन है कि यह ''आत्मा के लिए हल्का-फुल्का स्नैक नहीं'' बल्कि ''भरपूर खाना'' है।[8]

इसके अलावा रोमियों की पुस्तक, पौलुस के और कई पत्रों की तरह केवल अन्दरूनी समस्याओं से निपटने के लिए *नहीं* लिखी गई थी। रोम की कलीसिया के अन्यजाति और यहूदी लोगों में तनाव रहा हो सकता है। यदि उनमें तनाव था तो पौलुस की बातों से उस तनाव को कम करने में सहायता मिली हो सकती है, परन्तु उस परिस्थिति का समाधान करना इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य नहीं था।

अन्त में मेरा प्रस्ताव है कि इस पत्र का मुख्य उद्देश्य (जैसा कि कुछ लेखक निष्कर्ष निकालते हैं) स्पेन जाने के लिए पौलुस के लिए सहायता इकट्ठी करना *नहीं* था। यह सत्य है कि पौलुस को उम्मीद थी कि रोम की कलीसिया उसकी सहायता करेगी (15:24)। परन्तु यदि उसकी इच्छा पत्र के माध्यम से वित्तीय सहायता जुटाने की होती तो वह उन मण्डलियों से लेता, जो उसे और उसके काम को पहले से जानती थीं।

तो फिर यह पत्र लिखने का पौलुस का उद्देश्य क्या था? रोमियों की पुस्तक *सिखाने वाला* दस्तावेज है। पौलुस ने कहा कि वह रोम के मसीही लोगों से मिलने को तरसता था, ताकि वे ''स्थिर हो'' जाएं (1:11)। उसके लिए उन्हें ''स्थिर'' या मजबूत करने का एक ढंग सिखाने के द्वारा होना था (देखें 16:25, 26; प्रेरितों 18:23; मत्ती 28:20)। क्योंकि (जैसा कि पहले देखा गया) स्पष्ट सम्भावना थी कि वह रोम कभी नहीं पहुंच पाएगा इसलिए उसने वही उद्देश्य पूरा करने के लिए पत्र भेज दिया। मैरिल सी. टैनी ने लिखा है:

> कुरिन्थियों के विपरीत ... रोमियों की पत्री सच्चाई की शिक्षा में सुधार के लिए इतनी समर्पित नहीं थी। बेशक इसमें मसीही विचार के सभी क्षेत्रों से नहीं लिया गया, परन्तु युगान्त विज्ञान [''अन्त की बातों'' का अध्ययन] में मुख्य रूप से इसमें कमी है,[9] यानी यह इफिसियों के सम्भावित अपवाद के साथ पौलुस की अन्य किसी भी पत्री से मसीहियत के सार का अधिक क्रमबद्ध और पूरा विचार देती है। पौलुस की अधिकतर पत्रियां विवादास्पद हैं या सुधारक हैं; रोमियों की पुस्तक मुख्य रूप से शिक्षात्मक है।[10]

मोसस ई. लॉर्ड ने सुझाव दिया है कि उद्देश्य के प्रश्न का ''बेहतरीन उत्तर पत्र की सामग्री से दिया जाता है। यह सामग्री जिस भी उद्देश्य से लिखी गई, वही उद्देश्य इस पत्र को लिखने का था।''[11] जे. डी. थॉमस ने कहा है कि यह पुस्तक ''हर युग के लिए मूल मसीहियत की रूपरेखा है।''[12] मैं ज़ोर देने के लिए थॉमस के शब्दों को दोहराता हूं: रोमियों की पुस्तक *हर युग के लिए*

मूल मसीहियत की रूपरेखा है।

रोम के महत्व को ध्यान में रखें। एक ओर तो यदि पौलुस नगर में पहुंच जाता तो वह इसे मिशनरी केन्द्र बनाने की योजना बनाता, जहां से वह और उसके सहकर्मी रोमी साम्राज्य के शेष पश्चिमी भाग में पहुंच पाते। रोम के नाम उसके पत्र से इसके लिए मार्ग तैयार हो जाना था। दूसरी ओर यदि पौलुस रोम में *न* पहुंच पाता तो अन्यजाति जगत की राजधानी में मसीहियत की प्रकृति की उसकी (परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई) समझ की लिखित व्याख्या का पता चल जाना था।

क्या पौलुस को यह अहसास था कि वह हमेशा के लिए मूल मसीहियत की रूपरेखा बना रहा है ? सम्भवतया नहीं, परन्तु स्पष्टतया आत्मा की इच्छा यही थी, क्योंकि रोमियों की पत्री यही काम करती है। आर. सी. बेल ने इसे ''जड़ से फल तक मसीहियत की संक्षिप्त बात'' कहा है।[13]

पृष्ठभूमि क्या थी ?

अपनी तैयारी के रूप में हमें पौलुस द्वारा बताई गई समस्या का अनुमान लगाने की आवश्यकता है। कई समस्याओं का नाम दिया जा सकता है, जिनमें से कुछ लेखक के दृष्टिकोण से, कुछ प्राप्तकर्त्ताओं के दृष्टिकोण से, परन्तु मेरी अभी की दिलचस्पी उस समस्या की पृष्ठभूमि है कि चिन्ता पौलुस को थी। मुझे उम्मीद है कि कोई मुझे अत्यधिक सरल नहीं समझेगा, जब मैं यह सुझाव देता हूं कि इसके पीछे भी समस्या *मूसा की व्यवस्था के साथ मसीही का सम्बन्ध* था। कुछ मसीही यहूदी (हम उन्हें ''यहूदी शिक्षा देने वाले'' कहते हैं) यह सिखा रहे थे कि यीशु और प्रेरितों की शिक्षाओं के अलावा अन्यजातियों के लिए मूसा की व्यवस्था को मानना आवश्यक है। यह कोई नई समस्या नहीं थी, पौलुस ने पहले भी गलातियों की पत्री में इसी समस्या पर बात की थी।

रोमियों की पत्री में पौलुस का मुख्य प्रत्युत्तर वही था, जो गलातियों की पत्री में था कि इस मूसा की व्यवस्था के द्वारा हम धर्मी *नहीं* ठहराए जाते (देखें रोमियों 3:20क)। परन्तु पौलुस ने रोमियों को उत्तर विस्तार से दिया। गलातियों में उसने तर्क दिया कि व्यवस्था अस्थाई थी न कि स्थाई। रोमियों में उसने वही सच्चाई बताई (देखें 7:1-4) परन्तु बात को आगे ले गया कि हम मूसा की व्यवस्था के द्वारा धर्मी *नहीं* ठहराए जा सकते, क्योंकि कोई भी व्यवस्था हमें बचाने के लिए काफी नहीं है। हमें दया और अनुग्रह की आवश्यकता है, वरना हमें कोई आशा नहीं है। उसने निष्कर्ष निकाला कि हमारे उद्धार के आधार के रूप में विश्वास ही मान्य है, क्योंकि यदि हम अपने धर्मों के आधार पर उद्धार पा सकते तो हमारा उद्धार अनुग्रह से न होता (देखें 11:6)।

क्या यहां मैं आपसे पौलुस के विचार को समझने की उम्मीद रखता हूं ? नहीं, परन्तु मैंने इसे संक्षेप में बताना चाहा ताकि आप इससे अवगत हो सकें। अभी इसे समझने के लिए अधिक चिन्तित न हों। पत्र को पढ़ते हुए बस इस बात को ध्यान में रखें।

इसका महत्व का क्या है?

कहा गया है कि रोमियों की पत्री में ''मसीहीयत की धड़कन'' है। इसके महत्व की कई गवाहियां दी जा सकती हैं। सेमुअल टेयलर कोलिरत ने इस पुस्तक को ''अस्तित्व में सब से गहरी पुस्तक'' कहा।[14] अलैग्ज़ेंडर कैम्पबेल ने कहा कि रोमियों की पुस्तक का संदेश पौलुस के सब पत्रों की कुंजी बन जाता है।[15] टैनी ने इसे ''मसीही थियोलॉजी का मुख्य आधार'' कहा।[16]

अगस्टिन, लूथर और मूडी ने रोमियों की पुस्तक को अपने जीवन को चलाने वाला बल कहा। एडवर्ड ने इस पत्र को कलीसिया के इतिहास को रूप देने वाला कहा।[17]

कहने का अर्थ यह नहीं कि रोमियों की पुस्तक सबसे महत्वपूर्ण है या नये नियम की दूसरी पुस्तकों की उपेक्षा की जानी चाहिए। जेम्स बर्टन कॉफ़मैन ने लिखा है कि ''पवित्र के एक भाग को दूसरे से ऊपर उठाना, विशेषकर यदि ऐसा करने से परमेश्वर के प्रकाशन की आवश्यक एकता भंग होती हो।'' अत्यन्त खतरनाक है।[18] डग्लस जे. मू. ने ध्यान दिलाया कि रोमियों के नाम पत्र में से खोना ''क्रिस्टोलॉजी (मसीह के जीवन, चरित्र और स्वभाव का अध्ययन) या एस्केटोलॉजी (द्वितीय आगमन सहित अन्तिम बातों का अध्यनन), या एक्लेसियोलॉजी [कलीसिया और परमेश्वर की सनातन योजना में उसका स्थान (देखें इफिसियों 3:10, 11)] हैं।''[19]

रोमियों सबसे महत्वपूर्ण नहीं है, परन्तु यह महत्वपूर्ण बल्कि अत्यधिक महत्वपूर्ण है। एंडर्स नाइग्रन इसे ''पौलुस के अनुसार सुसमाचार'' मानता था।[20] जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है:

> रोमियों की पत्री नये नियम में मसीही सुसमाचार की पूर्ण और संलग्न नीति है। इसमें प्रेरित पौलुस ने ''परमेश्वर की सारी मंशा'' बता दी है। ... उसकी व्याख्या का शानदार, व्यापक तर्क है, जिसने सराहना की आज्ञा दी और आने वाली सब पीढ़ियों को इसका अध्ययन करने के लिए विवश किया।[21]

क्रिसोस्टोन ने पौलुस के पत्र को ''आत्मिक तुरही'' का नाम दिया।[22] तुरहियों का इस्तेमाल हमारा ध्यान खींचने के लिए या हमें जगाने के लिए किया जाता है!

रोमियों के नाम पत्र का महत्व इस बात का संकेत है कि पौलुस (और परमेश्वर) की इच्छा थी कि लोग इसे समझ पाएं। रोमियों की पुस्तक धमकाने वाली हो सकती है। यह साधारण पत्राचार नहीं है, न ही बिना विचार के पौलुस द्वारा लिखा गया धार्मिक लेख। रोमियों की पुस्तक की अधिक कठिन बातों को न समझ पाने के कारण हो सकता है कि आप यह निष्कर्ष निकालें कि पतरस के दिमाग में यही दस्तावेज होगा, जब उसने कहा कि पौलुस के पत्रों की कुछ बातें ''समझना कठिन है'' (2 पतरस 3:16)। हैनरी एच.हेली ने रोमियों की पुस्तक को समझना कठिन होने के दो कारण बताए हैं:

> एक कारण तो पौलुस की साहित्यिक शैली है। उसकी आदत थी कि पहले एक वाक्य लिख देना और फिर उससे हट जाना और हट जाना और हट जाना ताकि कई मामलों में, अगले वाक्य में सुधार के बजाय वाक्यांश कई बार पिछले को सुधारते हैं, जिससे उनमें सम्बन्ध स्थापित कर पाना कठिन हो जाता है। दूसरा कारण, इस पत्री की वह समस्या है जो हमें समस्या लगती नहीं है, परन्तु उस समय यह एक जीवित, ज्वलंत समस्या थी कि कोई अन्यजाति व्यक्ति बिना यहूदी धर्मांरित हुए मसीही बन सकता है या नहीं।[23]

हम तीसरा कारण जोड़ सकते हैं: हम में से कई लोग सोचने का काम अधिक पसन्द नहीं करते। रोमियों की पुस्तक उलझाने वाली हो सकती है। हम में से जो लोग यह मानते हैं कि लोगों को उद्धार पाने के लिए कुछ करना आवश्यक है (प्रेरितों 2:37, 38) उन आयतों को जानना

परेशान करने वाला हो सकता है, जो कहती है कि उद्धार उसके लिए ''जो काम नहीं करता बरन विश्वास करता है'' (रोमियों 4:5) परेशान करने वाला हो सकता है। जो लोग यह मानते हैं कि रोमियों की पुस्तक ''केवल विश्वास से'' उद्धार की शिक्षा देती है, उनके लिए यह पढ़ना परेशान करने वाला हो सकता है कि परमेश्वर ''हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा'' (रोमियों 2:6)। रोमियों की पुस्तक को पढ़ने के लिए विचार, और विचार, गम्भीर विचार की आवश्यकता है। यूजीन पीटरसन ने इस पत्र को ''विचार में एक जोखिम'' का नाम दिया है।[24]

आर. सी. बैल्ल ने लिखा है, ''यह पुस्तक केवल स्वाद लेने के लिए या जल्दी से निगल लेने के लिए नहीं है, यह पुस्तक 'चबाकर पचाने' के लिए है। ... रोमियों की पुस्तक जीवन की गहरी और ऊंची बातों के गम्भीर, उत्सुक, लगन वाले छात्रों के लिए है।''[25] रोमियों की पुस्तक पर प्रवचनों की श्रृंखला आरम्भ करते हुए प्रेंटिस मिएडर ने कहा, ''हम सतह पर नहीं हैं; हम तो सोलह फुट पानी के बीच में हैं, जो हमारे सिरों के ऊपर है!''[26]

परन्तु मुझे यह ज़ोर देना आवश्यक है कि रोमियों की पुस्तक को समझना *असम्भव* नहीं है। जीवन भर के अध्ययन के बावजूद इस पत्र के कई भाग बिना समझे रह जाएंगे, परन्तु यदि आप और मैं इसके मुख्य संदेश को समझ नहीं पाते तो इसे हमारे लिए सम्भाले रखने का कोई अर्थ नहीं होना था।

हमारे लिए इसकी शिक्षाओं को समझने के आवश्यक प्रयास करने के कई कारण हैं। पतरस ने इतना ही नहीं कहा कि पौलुस की कुछ बातें समझनी कठिन हैं, बल्कि यह भी कहा कि ''अनपढ़ और चंचल लोग'' उन बातों को ''खींचतान कर अपने ही नाश का कारण बनते हैं'' (2 पतरस 3:16)। हमें उन लोगों को उत्तर देने के योग्य होने की आवश्यकता है, जो रोमियों 1-4 का इस्तेमाल यह सिखाने के लिए करते हैं कि उद्धार ''केवल विश्वास से'' होता है, जो यह सोचते हैं कि उन्हें रोमियों 5 में ''मूल पाप'' की शिक्षा मिलती है, और जो युगों की शिक्षाओं का आधार रोमियों 9-11 को बनाते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि आपको और मुझे रोमियों की पुस्तक को समझने के लिए जो भी करना पड़े, उस कारण से करें जो यह *हमारे* लिए करेगी। आप पौलुस के मुख्य विचार को समझ *सकते* हैं, और जब आप समझ जाएं तो यह आपके जीवन को बदलने वाला हो सकता है। बैल्ल की पसन्दीदा अभिव्यक्तियों में से एक ''यदि आपको रोमियों की पुस्तक मिल जाए, तो परमेश्वर को आप मिल गए!''[27]

हमें क्या तलाश करनी चाहिए?

विषय कथन

पत्र में बताई गई समस्या की प्रकृति के कारण कई लोग यह ज़ोर देते हैं कि रोमियों 3:28 रोमियों की पुस्तक के विषय को बताता है: ''इसलिए हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।'' रोमियों 5:1 सहित और आयतें सुझाई जा सकती हैं, परन्तु अधिकतर लोग 1:16, 1:17 या दोनों के मेल को इस विषय की अभिव्यक्ति के रूप में बताते हैं:

> क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि उस में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के लिए प्रकट होती है; जैसा लिखा है [हबक्कूक 2:4 में] कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा (1:16, 17)।

परन्तु लेखक इन आयतों के मुख्य शब्द पर सहमत नहीं हैं। कई ''सुसमाचार'' पर ज़ोर देते हैं, जबकि कई ''विश्वास'' पर और अन्य ''धार्मिकता'' और ''धर्मी'' पर। ये *सभी* शब्द महत्वपूर्ण हैं, इसलिए पढ़ते समय आप उन पर ध्यान रखें।

मुख्य विचार

नये नियम के लेखक के ढंग का अनुमान लगाने का एक तरीका उसकी पुस्तक के आरम्भ की तुलना उसके समापन से करना है। 1:1-6 को देखें और फिर 16:20-27 में। दोनों में कौन से शब्द, वाक्यांश और विचार साझे हैं?

हर भाग में ''मसीह'' का उल्लेख (1:4, 6; 16:10, 25, 27) ''परमेश्वर'' की तरह कई बार आया है (1:1, 4; 16:20, 26, 27)। दोनों ही पौलुस के संदेश में विशेष हैं। ''सुसमाचार'' शब्द दोनों वचनों में है (1:1; 16:25) और वैसे ही ''अनुग्रह'' (1:5; 16:24)। ये मुख्य शब्द होंगे। रोमियों 1:2 उसकी बात करता है, जिसकी परमेश्वर ने ''पहले ही से अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा पवित्र शास्त्र में प्रतिज्ञा'' की थी, जबकि 16:26 उसकी बात करता है जो ''भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों के द्वारा'' प्रकट किया गया है। पढ़ते समय ध्यान दें कि पौलुस अपने तर्क के समर्थन के लिए पुराने नियम के हवालों पर कितना निर्भर रहता है।

इससे भी अधिक चौंकाने वाले समानांतरों में से एक 1:5 और 16:26 में मिलता है। 1:5 में पौलुस ने लिखा कि उसे प्रेरिताई इसलिए मिली कि ''सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें।'' 16:26 में उसने कहा कि प्रचार के द्वारा सुसमाचार ''सब जातियों को बताया गया कि वे विश्वास से आज्ञा मानने वाले हो जाएं।'' ''अन्यजातियां'' (गैर यहूदी) और ''जातियां'' एक ही यूनानी शब्द से निकले हैं (देखें KJV)। तीन संदेश पत्र के बीच में डोरी की तरह चलते हैं:

(1) धर्मशास्त्रीय संदेश: *उद्धार ''विश्वास'' के आधार पर है।*

(2) व्यावहारिक संदेश: *यह विश्वास ''आज्ञा पालन'' में दिखाया जाता है।* बाहरी पापियों के आज्ञा पालन का उल्लेख है (देखें 6:16, 17),[28] परन्तु मसीही लोगों से अपेक्षित आज्ञा पालन पर पत्र के अन्तिम भाग में ज़ोर दिया गया है (अध्याय 12-16)।

(3) विश्वव्यापी संदेश: *उद्धार ''सब जातियों'' के लिए है।* सब लोग खोए हुए हैं और सबको उद्धार की आवश्यकता है। सबका उद्धार एक ही तरह से अर्थात विश्वास के द्वारा अनुग्रह से होता है।

मैं डेल हार्टमैन का यह उदाहरण जोड़ता हूं।[29] 1:1-6 में पौलुस ने एक खूंटा गाड़ा। 16:20-27 में भी उसने एक और खूंटा गाड़ा। दोनों खूंटों के बीच उसने एक रेखा खींची, जिस पर उसने

अपने तर्क और निष्कर्ष टांग दिए।

मुख्य शब्द

मैंने रोमियों में कई महत्वपूर्ण शब्दों का उल्लेख किया है। लैरी डीयसन ने मुख्य शब्दों की सूची दी है और बताया है कि वे कितनी बार आए हैं।[30] इनकी संख्या अनुवाद किए जाने वाले शब्द पर निर्भर है, परन्तु नीचे डीयसन की सूची का एक नमूना दिया गया है:

''धार्मिकता (और सम्बन्धित शब्द)—66 बार''
''व्यवस्था''—75 बार
''विश्वास''—61 बार
''पाप,'' ''पापी,'' और ''पाप भरा''—58 बार
''मृत्यु,'' ''मरना,'' ''हत्या''—48 बार
''शरीर,'' ''शारीरिक,'' ''सांसारिक''—30 बार
''अनुग्रह''—25 बार
''पवित्र'' (और सम्बन्धित शब्द)—24 बार

रोमियों की पुस्तक पर कई पाठों का आरम्भ इन तथा अन्य शब्दों पर शब्द अध्ययन के साथ होता है। वचन में मिलने पर हम उन शब्दों पर चर्चा करेंगे। इस प्रकार, हम देखेंगे कि पौलुस ने अपने ढंग से किस प्रकार इस विचार को विकसित किया।

हम पुस्तक की रूपरेखा कैसे बना सकते हैं?

पौलुस के कई पत्र थियोलॉजिक (डॉक्ट्रिनल) शिक्षा से आरम्भ होते हैं और व्यावहारिक शिक्षा से आरम्भ होते हैं। रोमियों की पत्री में भी यही बात है, परन्तु लेखकों में दिए जाने वाले ज़ोरों पर सहमति नहीं है। उदाहरण के लिए, कई लोग थियोलॉजिक भाग में अध्याय 9 से 11 को शामिल करते हैं, जबकि अन्य इन अध्यायों को प्रासंगिकता के रूप में बताते हैं। कुछेक तो यह भी कहते हैं कि थियोलॉजिकल भाग अध्याय 5 से समाप्त होता है।

पत्र की रूपरेखा बनाने के सरल ढंगों में से एक इसे दो समान भागों में बांटता है! पहले आठ अध्याय (1-8) और अन्तिम आठ अध्याय (9-16)। 1 से 8 अध्यायों में पौलुस ने अपनी प्रस्तावना बनाई जबकि अध्याय 9 से 16 में उसने प्रस्तावना की प्रासंगिकता बनाई। अन्तिम आठ अध्याय भी स्वाभाविक रूप से अपने आप को बांट लेते हैं। अध्याय 9 से 11 में, पौलुस ने समझाया कि किस प्रकार उसकी प्रस्तावना उससे मेल खा सकती है, जिसे जिम मैक्गुइगन ने ''यहूदी समस्या'' कहा।[31] अध्याय 12 से 16 में, पौलुस ने अपनी प्रस्तावना को प्रतिदिन के जीवन में लागू किया। नीचे एक रूपरेखा दी गई है। पढ़ते समय इस छोटी रूपरेखा को ध्यान में रखें। इसे याद कर लें तो और भी अच्छा रहेगा।

रोमियों की रूपरेखा

परिचय (1:1-17)

I. डॉक्ट्रिनल (1:18-8:39)
  क. दोषी ठहरना (1:18-3:20)
    1. अन्यजातियों को
    2. यहूदियों को
  ख. धर्मी ठहराना (3:21-5:21)
  ग. पवित्र किया जाना (6:1-7:25)
  घ. महिमा दिया जाना (8:1-39)

II. व्यावहारिक (9:1-15:13)
  क. व्याख्या (9:1-11:36)
    1. इस्राएल को दी गई प्रतिज्ञाओं से मिलाए जाकर विश्वास से धर्मी ठहराए गए
    2. परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के साथ मिलाए जाकर विश्वास से धर्मी ठहराए
  ख. प्रासंगिकता (12:1-15:13)

सारांश (15:14-16:27)

अन्य रूप रेखाओं में, कई लेखक उन शब्दों को मिलाते हैं, जिन्हें वे रोमियों की पुस्तक के मुख्य शब्द मानते हैं। ''धार्मिकता'' शब्द को दर्शाते हुए, दोहराव का इस्तेमाल किए जाने वाली रूप रेखा का सार इस प्रकार है:[32]

I. पाप (1:18-3:20): धार्मिकता की आवश्यकता
II. उद्धार (3:21-5:21): धार्मिकता थोपी गई
III. पवित्रीकरण (6:1-8:39): धार्मिकता प्रधान की गई
IV. सम्प्रभुता (9:1-11:36): धार्मिकता ठुकराई गई
V. सेवा (12:1-15:13) धार्मिकता व्यवहार में लाई गई

सारांश

इकट्ठे सफ़र करने के लिए आपके मनों को तैयार करने और आपकी निजी यात्रा में आपकी तैयारी के लिए और भी कहा जा सकता था, परन्तु अभी के लिए इतना ही काफी होगा। अब समय है कि उसे पढ़ना आरम्भ करें जिसके लिए मैंने आपको इस पाठ में प्रोत्साहित किया है। अच्छा होगा यदि आप समय निकाल कर इस पत्री को एक बार नहीं बार-बार पढ़ें।

जब मैं लड़का था तब कलीसिया के लोगों को आमतौर पर आराधना सभाओं के लिए काफी दूर तक जाना पड़ता था। प्रार्थना में अगुआई करने वाले आमतौर पर प्रभु से सफ़र में अनुग्रह करने

के लिए प्रार्थना करते थे कि परमेश्वर आराधना में आने वालों में से हर एक के आने-जाने में सहायक हो। रोमियों की पुस्तक के इस रोमांचकारी, परन्तु भयभीत आत्मिक सफर के लिए, आइए प्रभु से ''सफ़र में अनुग्रह'' करने के लिए प्रार्थना करें।

कहते हैं कि ''हज़ारों मील का सफ़र एक कदम से ही आरम्भ होता है।''[33] हम एक कदम अगले पाठ में उठाएंगे।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

(1) यदि आप रोमियों की पुस्तक क्लास में पढ़ाते हैं तो इसके लिए आपको ऐसे ही पाठ परिचय को शामिल करना चाहिए। यदि आप रोमियों की पूरी पुस्तक पर प्रचार करने का निर्णय लेते हैं, तो आपको अगले पाठ के साथ अपनी शृंखला आरम्भ करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। रोमियों की पुस्तक के कई अध्ययन पौलुस के जीवन, काम तथा चरित्र की समीक्षा के साथ आरम्भ होते हैं। यदि आपके सुनने वाले इस प्रेरित से परिचित नहीं हैं, तो आपको इस या अगले पाठ में ऐसी समीक्षा शामिल करनी चाहिए।

(2) रोमियों की पुस्तक पर इन पाठों को लिखते हुए मैं इस सामग्री के तीन मुख्य उपयोगों को ध्यान में रख रहा हूं। कुछ ही लोग रोमियों पर प्रवचनों की शृंखला में प्रचार करेंगे। अधिकतर लोग रोमियों पर क्लासों में ही सिखाएंगे। अन्य लोग इन पाठों का अध्ययन व्यक्तिगत सुधार के लिए करेंगे।

उनकी सहायता के लिए जो रोमियों की पुस्तक पर प्रचार करेंगे, एक-एक आयत का अध्ययन करने के बजाय मैं विचारों के शीर्षक तथा प्रबन्ध के होमीलेटिक ढंग का इस्तेमाल करने की कोशिश करता हूं। प्रचार के उद्देश्यों के लिए उपयुक्त जानकारी से मैं अधिक जानकारी शामिल करता हूं। आप जिस भी सामग्री का इस्तेमाल करते हैं, उसमें से आवश्यकता के अनुसार चुन लें।

उनके लिए जो रोमियों की पुस्तक में से क्लास में पढ़ाएंगे, मैं वचन को समझाने का प्रयास करता हूं और पूछे जा सकने वाले प्रश्नों का अनुमान लगाता हूं। परन्तु इस बात को समझ लें कि इसकी कुछ जानकारी आपके लिए है, न कि आपके छात्रों के लिए। उदाहरण के लिए क्लास के अधिकतर लोग यूनानी शब्दों में दिलचस्पी नहीं लेंगे। इसके अलावा यदि आप इन अध्ययनों में उद्धहरण का इस्तेमाल करते हैं तो यह बताने के लिए कि किसने कहा, रुकना आवश्यक नहीं है। यदि आप इन पाठों का अध्ययन अपने सुधार के लिए करते हैं, तो इनकी हर बात आपके लिए है। मैं केवल इतनी चेतावनी देता हूं कि इसमें लिखी बातों की तुलना बाइबल से कर लें। यदि यह परमेश्वर के वचन से मेल खातीं हैं तो इसे मान लें, तो यदि यह वचन से मेल नहीं खातीं, तो छोड़ दें।

टिप्पणियां

[1]चॉर्ल्स हॉज, *कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द रोमन्स* (प्रिंसटॉन, न्यू ज़रसी: पृष्ठ नहीं, 1886; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग, 1968), 9. [2]डॉन डीवेल्ट, *रोमन्स रिअलाइज़्ड,* बाइबल स्टडीज़ टैक्सटबुक सीरीज़ (जौपलिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस, 1959), 12. [3]वही। [4]रोमियों और 1 कुरिन्थियों दोनों में सोलह अध्याय हैं; NASB वाली मेरी प्रति में, रोमियों की पत्री में पन्द्रह पृष्ठ हैं, जबकि 1 कुरिन्थियों में 14 पृष्ठ हैं। [5]टेलीविज़न कार्यक्रम, *ट्रुथ इन लव* फोर्ट वर्थ, टैक्सस, 2 जनवरी, 2002 को दिया गया प्रवचन डेव मिलर, ''दि मीनिंग ऑफ़ रोमन्स (1)।'' [6]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एपलीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 19. [7]विद्वान *kerygma* शर्त का इस्तेमाल करते हैं, जो ''प्रचार किया गया है'' या ''संदेश'' के अर्थ वाला यूनानी शब्द है। ''प्रथम सिद्धांत'' वाक्यांश के बारे में देखें इब्रानियों 5:12; KJV. [8]चॉर्ल्स आर. स्विन्डल, *कमिंग टू टर्मस विद सिन: ए स्टडी ऑफ़ रोमन्स 1-5* (अनाहिम, कैलिफोर्निया.: इनसाइट फॉर लिविंग, 1999), 6. [9]अन्य मुख्य विषयों जैसे कलीसिया तथा सार्वजनिक आराधना की अभिव्यक्तियों के बारे में बहुत कम बताया गया है। [10]मैरिल सी. टैनी, *न्यू टैस्टामेंट सर्वे,* संशो. वाल्टर एम. डनट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 305.

[11]मोसेज ई. लार्ड, *कमैंट्री ऑन पॉल 'स लैटर टू रोमन्स* (लैक्सिंग्टन, कैंटकी: पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), xx. [12]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (ऑस्टिन टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 3. [13]जे. डी. थॉमस, क्लास नोट्स, *रोमन्स,* अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (1955) में उद्धृत। [14]सेमुएल टेयलर कोलरिज, *टेबल टॉक, arr. and ed.* टी. एश (लंदन: जॉर्ज बेल एण्ड सन्स, 1896), 228. [15]थॉमस, क्लास नोट्स। [16]टैनी, 306. [17]एडवर्ड फज, *रोमन्स,* न्यू टैस्टामेंट हैल्पस (अथेन्स, अलाबामा: सी.ई.आई. पब्लिशिंग कं., 1970), 12. [18]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1973), vi. [19]मू, 20. [20]एंडर्स नाइग्रन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (फिलाडेल्फिया: फोर्टरैस प्रैस, 1949), 2.

[21]लैरी डीयसन, ''*दि राइटसनेस ऑफ गॉड*'': *एन इन-डेप्थ स्टडी ऑफ रोमन्स,* संशो. (क्लिफटन पार्क, न्यू यॉर्क: लाइफ कम्युनिकेशंज़, 1989), 6. [22]क्रिसोस्टोम *होमिलीस ऑन दि एपिस्टल टू दि रोमन्स* तर्क। [23]हैनरी एच. हेली, *हेली 'स बाइबल हैंडबुक,* संशो. (शिकागो: हैनरी एस. हेली, 1955), 522. [24]यूजीन एच. पीटरसन, *दि मैसेज: न्यू टैस्टामेंट विद साम्ज़ एण्ड प्रोवर्ब्स* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: नवप्रैस पब्लिशिंग ग्रुप, 1995), 359. [25]आर. सी. बेल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 2. [26]प्रेस्टॉनक्रेस्ट चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, डलास, टैक्सस, 1 अक्टूबर, 2000 को दिया गया प्रवचन, प्रेंटिस मीयडर, ''वैन इन रोम।'' [27]थॉमस, *रोमन्स,* 3 में उद्धृत। [28]इस आज्ञापालन में सुसमाचार को सुनना (10:17), यह विश्वास करके अंगीकार करना कि यीशु जी उठा प्रभु है (10:9, 10), पाप से मन फिराना (2:4) और बपतिस्मा लेना (6:3-6) शामिल है। [29]ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी ओक्लाहोमा, 11 जनवरी, 2004 को पढ़ाई गई क्लास, डेल हर्टमैन। [30]डीयसन, 16.

[31]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मॉटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 5. [32]रोमियों की पुस्तक की कई रूपरेखाएं ''धार्मिकता'' शब्द के इर्द-गिर्द घूमती हैं। यह रूपरेखा वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *वियर्सबे 'स एक्सपोज़िटरी आउटलाइन ऑन द न्यू टैस्टामेंट* (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक हाउस, 1992), 359 की एक रूपरेखा पर आधारित है। [33]लाओ-ज़ू (सी. 604 लगभग-531 ई.पू.), *दि वे ऑफ़ लाओ-ज़ू,* जॉन बार्टलेट, *बार्टलेट 'स फेमिलयर कोटेशंस, सोलहवां संस्क.,* सम्पा. जस्टिन कपलिन (बोस्टन: लिटिल, ब्राउन एण्ड कं., 1992), 57 में उद्धृत।

इस अध्ययन में इस्तमाल किए गए बाइबल के संस्कर

AB-एम्पलीफाइड बाइबल
CEV-कंटेम्परेरी इंग्लिश वर्ज़न
CJB-कम्पलीट ज्यूइश बाइबल
कोनबियर-दि एपिस्टल ऑफ़ पॉल, बाय डब्ल्यू. जे. कोनिबियर
गुडस्पीड-दि न्यू टैस्टामेंट, ऐन अमेरिकन ट्रांसलेशन, बाय जे. गुडस्पीड
KJV-किंग जेम्स वर्ज़न
LB-लिविंग बाइबल पेराफ्रेस
McCord-[ह्यूगो] मेकॉर्ड'स न्यू टैस्टामेंट ऑफ़ द एवरलास्टिंग गॉस्पल
(द फ्रीड-हार्डमैन ट्रांसलेशन)
MSG-दि मैसेज पेराफ्रेस, बाय यूजीन पीटरसन
NASB-न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल
NCV-न्यू सैंचुरी वर्ज़न
NEB-न्यू इंग्लिश बाइबल
NIrV-न्यू इंटरनैशनल रीडर्स वर्ज़न
NIV-न्यू इंटरनैशनल वर्ज़न
NKJV-न्यू किंग जेम्स वर्ज़न
NLT-न्यू लिविंग ट्रांसलेशन
NRSV-न्यू रिवाइज़्ड स्टैंडर्ड वर्ज़न
Phillips- दि न्यू टैस्टामेंट इन मॉडर्न इंग्लिश, बाय जे.बी.फिलिप्स
REB-रिवाइज़्ड इंग्लिश बाइबल
RSV-रिवाइज़्ड स्टैंडर्ड वर्ज़न
SEB-सिम्पल इंग्लिश™ बाइबल
TEV-टुडे'स इंग्लिश वर्ज़न पैराफ्रेस
वेयमाउथ-दि न्यू टैस्टामेंट इन मॉडर्न स्पीच, बाय रिचर्ड फ्रांसिस वेयमाउथ